सबको कहना है– भई, शिवबाबा को याद करो, शिवबाबा को याद करो। अक्षर तो बहुत सहज है। शिवबाबा को सभी भारतवासी जानते हैं; क्योंकि शिव के मंदिर में पूजा आदि करने जाते हैं और ये भी जानते हैं कि शिव बाबा है। शिवबाबा के मंदिर में जाते हैं। अभी शिवबाबा कौन हैं, तो वो कोई भी मनुष्य मात्र नहीं जानते हैं सिवाय तुम बच्चों के। तुम बच्चों में भी फिर ऐसे बाबा को, यहाँ भी बैठे रहेंगे ना, तो बुद्धियोग कहाँ का कहाँ भटकता रहेगा। तो तुम्हारा फर्ज है कहना। जबकि बैठे हो याद में तो कह देना चाहिए– भाइयों और बहनों! बाप को याद करो जिनसे वर्सा मिलना है। भाई–बहनों तो सभी हो गए ना। तुम अभी सच्चे भाई–बहनों हो। वो तो ऐसे ही मेल–फिमेल को कह देते हैं– भाई–बहनों, ब्रदर्स एण्ड सिस्टर्स। जब कोई लेक्चर करते हैं, तो ऐसे कहेंगे– ब्रदर्स एण्ड सिस्टर्स। अभी ब्रदर्स–सिस्टर्स क्यों कहते हैं? क्योंकि वो मेल है, वो फिमेल है। तो वो बहनें हैं आपस में, वो भाई हैं आपस में। यहाँ वो बातें नहीं हैं। बहनों और भाइयों, बाप को याद करो। बाप को याद करो माना ही बहनों और भाइयों, अपने बाप क्रियेटर को याद करो। तो तुमको उनसे वर्सा मिलने का है। तुम उनको याद करने से...। देखो, फर्क है ना। भाई–बहनों तो बिल्कुल एक कॉमन बात है। ये बहनों का संगठन है, ये भाइयों का संगठन है। ऐसे–2 वूमेन का भी ऐसोसियेशन है, तो मेन का भी एसोसियेशन्स हैं। वहाँ ये बातें नहीं हैं। यहाँ तो तुम बैठते हो, कहते हो– बहनों! तुमको ऐसे कहना है। ये तो बाप आ करके कहेंगे कि बच्चों, बाप को याद करो; क्योंकि दोनों ही बाप हैं ना। वो रूहानी, वो जिस्मानी। दोनों ही हो गए बापदादे। तो दोनों ही इकट्ठे कहेंगे– बच्चों, बाप को याद करो। तो घड़ी–2 बीच–2 में..बुद्धि कहाँ यहाँ–वहाँ न चली जाए। बैठे–2 जाती है। कहाँ न कहाँ और कोई तरफ में चली जाएगी। बाबा ने ये तो समझा दिया है, भक्तिमार्ग में भी ऐसे ही। तुम ये भक्तिमार्ग तो पास किया है ना कि इसी उत्सव में भक्तिमार्ग में। पास की तो बात इनसे ताल्लुक रखती है। जब भी कोई भक्तिमार्ग में भी बैठते हैं, भले माला फेरते हैं या कृष्ण के सामने बैठते हैं या कोई देवता के आगे जाते हैं तो भी उसी समय में याद किया और बस। मंदिर में गया, याद किया। कौन है, कहाँ से आया, ये राजाई किसको मिली, क्यों मिली, ये तो कुछ पता नहीं है। तो इसको कहा ही जाता है ब्लाइण्ड वर्शिपर्स यानी पुजारी; परन्तु अंधश्रद्धालु; क्योंकि जिसकी पूजा करते हैं उनको जानते नहीं हैं। चलो भई सिक्ख है, तो वो गुरूनानक को पूजते हैं। तो ठीक है। वो जानते हैं, गुरूनानक ने हमारा सिक्ख धर्म स्थापन किया। बस, और तो उनका कोई नहीं है ना। बस, नानक ही नानक या उनके दूसरे बच्चे होंगे, गुरू गोविन्द सिंह फलाना। फिर उनका उनको ये पता नहीं है। ये हैं उनके बच्चे; परन्तु इनका कर्तव्य क्या है, वो कुछ भी नहीं है। बस, वो गुरुओं के गुरुपोटे। ऐसे वो लोग चले आते हैं। बाकी ये सब पुनर्जन्म वगैरह की बातें, जो तुम समझ रहे हो, वो नहीं जानते हैं। तो वो बैठकर गुरूनानक को याद करेंगे। गुरूनानक कोई सदैव थोड़े ही किसको याद रहते हैं। अच्छा, सो भी अभी तुम बच्चे समझ गए कि गुरूनानक को याद करे, क्राइस्ट को याद करे, बुद्ध को याद करे, जो–2 जिनका धर्म स्थापक है, उनको याद करे। तो भी उनको क्या याद करेगा! उन बिचारों को ये थोड़े ही मालूम है वो कहाँ है। ... समझते हैं– वो ज्योति ज्योत समाया। गुरूनानक के लिए भी ऐसे ही कहेंगे कि ज्योति ज्योत समाया या निर्वाणधाम पधारा या वाणी से परे गए या ऐसे–2 कुछ कहते रहेंगे या हाजिरा हजूर है। जिधर देखेंगे वो भई नानक ही नानक हमको देखने में आता है। जिधर देखो तहाँ राधे ही राधे। जहाँ देखो तहाँ कृष्ण ही कृष्ण। जहाँ देखो वहाँ राम ही राम। वो ऐसे कहते रहते हैं जैसे कि जनावरों के माफिक; क्योंकि बाप बैठ करके समझाते हैं ना कि बच्चे, तुम्हीं भारतवासी सूरत देवताओं वाले और सीरत भी देवताओं जैसी। देखो, कैसे खूबसूरत हैं! चित्र तो हैं ना। अगर चित्र न होता तो कोई नहीं समझ सकते। ये भी शुक्र (है) जो चित्र हैं। नहीं तो ये भी बिचारे नहीं समझते हैं कि राधे और कृष्ण का इन लक्ष्मी–नारायण के साथ संबंध क्या है। इतना मूर्ख बुद्धि! तो बाप ही आ करके समझाते हैं। भले कोई भी सुने, तो भी तुम उनको समझा सकते हो कि ये कोई हमारा आकार या साकार वाला नहीं समझाते हैं, ये तो निराकार बाबा हमको समझाते हैं। वास्तव में असल निराकार तो सभी हैं और साकार द्वारा बोलते हैं। अगर निराकार–साकार दोनों अलग हो

जावे तो फिर निराकार कुछ बोल नहीं सके। निराकार (को) तो ये ऑरगन्स चाहिए ही ज़रूर। हमेशा कह देना, कोई भी कहे कि तुम्हारा बाबा ये कहते हैं, बोलो– हमारा बाबा नहीं, ये तो तुम्हारा भी बाबा है। ये तो शिवबाबा है, जिसको पतित–पावन, ज्ञान का सागर कहते हैं। वो तो बेहद का बाबा है ना। जैसे लौकिक बाप बच्चों को बैठ करके समझाते हैं। उनको हक है। कोई चमाट भी मार देवे, कुछ भी कह देवे, तो हक है। तैसे ये तो बेहद का बाबा है।... तो बेहद के निराकार बाबा को शरीर चाहिए ना। तो वो खुद कहते हैं कि हाँ, हम ब्रह्मा के तन में आते हैं, तभी तो पहले–2 ब्राह्मण धर्म की स्थापना हो ना। ब्रह्मा द्वारा रचना किसकी होगी? शूद्रों की तो नहीं होगी। ब्रह्मा द्वारा रचना कोई देवताओं की नहीं होगी। ब्रह्मा द्वारा रचना होगी ब्राह्मणों की। तो वो बैठ करके अपने बच्चे ब्राह्मणों को समझाते हैं, बच्चों को समझाते हैं, दूसरे कोई को नहीं समझाते हैं। उसमें दूसरे कोई को भी बुखार नहीं लगना चाहिए। ये बैठ करके समझाते हैं कि देखो, तुम बच्चे पहले किसको कुछ भी नहीं जानते थे। भक्ति करते थे, जानते किसको भी नहीं थे। भले शिव–2, शिव–2 कहते हैं। देखो, अभी भी शिव के मंदिर में जाते हैं, उनको शिवबाबा ही कहते हैं या शिव भगवान ही कहते हैं। हम शिवबाबा के बच्चे सालिग्राम हैं इसलिए हम कोई भगवान हैं। नहीं, ऐसे थोड़े ही है। जब तलक बच्चे बच्चे हैं, बाप बाप है, तब तलक ऐसे थोड़े ही कहेंगे– हम भी बाबा हैं। नहीं, जब तलक बाबा बने, तब जबकि फिर बच्चे पैदा करे। नहीं तो बाबा कैसे कह सकते हैं? ये तो बाबा है... बच्चे पैदा किए हैं। देखो, ढेर हैं। भले एडॉप्ट किए हैं। तो बच्चों को बैठकर समझाते हैं और बच्चे ही समझते हैं, जो निश्चयबुद्धि हैं और जो पुरुषार्थ करते हैं। यहाँ बहुत हैं जो निश्चयबुद्धि नहीं हैं, तो भी यहाँ हैं। निश्चयबुद्धि तो बाप की आज्ञा पर चलें ना। ऐसे भगवान, ईश्वर शिव की श्रीमत। श्रीमत श्रेष्ठ बनाती है। किसको? आसुरी मत... आसुरों को। तो असुरों को देवता बनाना, तो गुण चाहिए ना। देखो, असुरों के गुण और देवताओं के गुण, सो तो तुम जाओ, मंदिर में जा करके सुनो। असुर लोग क्या कहते हैं उनको? आप सर्वगुण सम्पन्न हो, हम पापी हैं, नीच हैं, कपटी हैं। हमारे में पाँचों विकार हैं; क्योंकि उनको कह देते हैं निर्विकारी। जब कोई को निर्विकारी कहा जाता है माना उनमें कोई भी विकार नहीं हैं। जब विकार है तो फिर सभी विकार है। ये तो ज़रूर है ना ; क्योंकि आपस में ज्वाइंट फैमिली है विकारों की– देहअभिमान,काम,क्रोध,लोभ,मोह। अपनी–2 वो अवस्था तो आनी चाहिए ना। उस अवस्था में लाने के लिए कि आप जैसे हो, तैसे हम बन रहे हैं अभी। अभी तुम बच्चों को मालूम है कि हम जन्म–जन्मांतर इन देवताओं के आगे नमन करते थे और उनकी महिमा करते थे। अभी हम जानते हैं कि हमको ऐसा बनना है। किसकी मत पर? श्रीमत पर। ये भी समझ आती है कि बरोबर बादशाही स्थापन हो रही है। श्रीमत पर पूरे तो सभी चलेंगे नहीं, ज़रूर नंबरवार चलेंगे; क्योंकि बड़ी बादशाही है। देखो, उनका विस्तार कितना बड़ा बाबा ने समझाया है कि कैसे उनमें भी बनते हैं सब प्रकार के। राजाई में भी सब प्रकार के– नौकर,चाकर,मसानी,चण्डाल वगैरह सब बनते हैं। ऐसे नहीं है कि नहीं बनते हैं। बाप कहते हैं ना– इसमें भी जो ऐसी चलन चलते हैं तो वो तुमको आगे चलकर साक्षात्कार होगा कि बरोबर ये चाण्डाल का जन्म लेंगे, चाण्डाल के फैमिली में जाएँगे। कोई एक नहीं चाण्डाल बनते हैं। चाण्डाल की बड़ी फैमिली हो जाती है। ये चाण्डाल लोग हैं ना। ये चाण्डाल लोग की भी बड़ी कमेटी है। जैसे दूसरों की एसोसियेशन/यूनियन होती है ना, तैसे इन चाण्डालों की भी यूनियन है। ये सब आपस में मिलते हैं एकदम। उनको कोई भी तकलीफ हो, अगर वो चाहे कि हम स्ट्राइक करें तो मुर्दे वहाँ पड़े रहें, कोई जलाएँगे नहीं। इनकी भी यूनियन। इस समय में हर एक की यूनियन रहती है देखो, सब बात की, ये मेहतर...उनकी भी यूनियन है। अगर वो चाहें स्ट्राइक पर जावें तो कोई भी कुछ काम नहीं कर सकते हैं, गंदे हो जावें मनुष्य। वैसे...वहाँ भी ऐसे होते हैं। पर वहाँ कोई वो नहीं होते हैं जैसे यहाँ स्ट्राइक वगैरह करते हैं। बाबा बैठकर समझाते हैं कि देखो, ख्याल करो, जैसे यहाँ दिखलाते हैं ना क्या बैरिस्टर बनेंगे, फलाना बनेंगे, वो बनेंगे या देवता बनेंगे। ये चित्र बनाए हैं कुछ। ये कैसे? वो तो हुआ यहाँ के लिए; परन्तु यहाँ फिर हमारी राजधानी में राजा बनेंगे, रानी बनेंगे, राजाई में जाएँगे, राजाई में भी अच्छी राजाई में जाएँगे, नौकर बनेंगे,

दास बनेंगे, दासियाँ बनेंगे, चाण्डाल बनेंगे। सो भी तो हैं ना। प्रजा में भी ऐसे ही, साहुकार प्रजा बनेंगे, साधारण प्रजा बनेंगे, नौकर–चाकर बनेंगे या चाण्डाल बनेंगे। सारी बादशाही स्थापन हो रही है। कोई कम थोड़े ही है। देखो, कितनी बेहद की बातें बाबा समझाते हैं। तो ये बुद्धि में बैठनी चाहिए ना। अगर ये भी बुद्धि में बैठ जाए कि हम अपने लिए, भविष्य के लिए, हम योगबल से श्रीमत पर श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ राजाई पद में अपना वर्सा लेंगे। ये तो बुद्धि में बैठना चाहिए ना। न सिर्फ हम बनेंगे और दूसरों को भी बनाएँगे। देखो, इतना नशा तो रहना चाहिए ना। जब दूसरे को भी बनावे तब कहें कि हाँ, ये खुदाई खिदमतगार हैं या बाबा की अच्छी पूरी खिदमत करता है। वो कोई छिपी थोड़े ही रह सकती है। अरे बच्ची, कुछ भी छिपा नहीं रह सकता है। आगे तो दिन–प्रतिदिन तुम चलते रहेंगे। आगे चलकर तुमको बहुत कुछ मालूम पड़ता रहेगा। ये तो लॉ है ना। दिन–प्रतिदिन तुमको ज्ञान की पराकाष्ठा होती जाएगी यानी ये ज्ञान प्रकाश होता जाता है। ये समझते हो कि शुरुआत में इतना ज्ञान प्रकाश थोड़े ही था। दिन–पर–दिन ज्ञान का प्रकाश होता जाता है, सोझरा मिलता जाता है। क्या–2 होने का है मनुष्य बिचारों को थोड़े ही मालूम है। देखो, वो बॉम्ब्स बनाते रहते हैं, बनाते रहते हैं आपस में। जितना कहते हैं कि न बनें, इतना और बनते रहते हैं। देखो, अख़बारें तो तुम बच्चियाँ पढ़ते नहीं हो। कोई–2 पढ़ते हैं। अभी चीन भी बड़े–2 बॉम्ब्स बना रहे हैं। तो बनाते हैं। क्या रखने के लिए कोई चीज़ होती है? अच्छा, शुरू में ही देखो, पहले कोई बंदूकों से लड़ाई नहीं चलती थी, तलवारों से चलती थी। बंदूक बनी किसलिए ? काम में आने के लिए। फिर अभी देखो तोपें बनीं, फिर ये बने, फिर अभी बॉम्ब्स बने। तो ये चीज़ बनती है काम में ले आने के लिए। डेस्ट्रॉय करने के लिए तो नहीं है ना, रखने के लिए तो नहीं। तो वो देखा है, बिचारे इतना अंध में हैं, वो समझते भी हैं कि इनसे तो मौत होगा; क्योंकि ट्रायल चलती है ना हिरोशिमा में, जापान में। तो इनसे क्या हाल होगा? अभी उस समय में जिसको बाबा समझते हैं कोई 28/30 वर्ष हुए होंगे उस लड़ाई को।..... तो 28/30 वर्ष में कितनी उन्नति की है! कितने ढेर बनाए हैं! कितने लिके–छिपे और भी बनाए। .. नहीं छिपते हैं भई। कोई भी बॉम्ब का वो ट्रॉयल करते हैं तो उनके पास ऐसे इन्स्ट्रुमेन्ट्स हैं जो उनको मालूम पड़ जाता है कि फलाने तरफ से फलाने...। बादशाही कोई मनुष्य तो नहीं करेंगे ना। ये तो बादशाही, भई बरोबर चाइना। अभी वो भी बॉम्ब्स बना रही है। अभी ये तीसरा कि चौथा ट्राई कर रही है। वो कहते हैं वो ऐसे ही बॉम्ब्स बनाते हैं जैसे हम लोगों ने हिरोशिमा को उड़ाया था। वो ऐसे ही बॉम, हाइड्रोजन बम, बॉम्ब्स तो किस्म–2 के बनते हैं ना। बड़े खौफनाक बनते हैं; क्योंकि बाप बैठ करके फिर समझाते हैं बच्चे कि ये जो विनाश होता है ना... बच्चे तो फिर भी हमारे हैं ना। तो पिछाड़ी में ऐसे विनाश न हो जो इनकी टांगे–बाँहें...। कोई अस्पताल–वस्पताल होंगी नहीं। इसलिए उनके साथ सबका .. मौत...। ये एकदम बच्ची, बहुत मौत है। देखो, दिखलाया है ना बच्चों को कि ये देखो कैसे ये सब जलते हैं, कैसे बॉम्ब्स .... कैसे ये मूसलधार बरसात पड़ती है, कैसे फैमिन हो जाता है। तो निशानियाँ तो हैं ना। अच्छा, बुद्धि भी ऐसे कहती है कि मनुष्य बढ़ते जाते हैं। ये अन्न आएगा कहाँ तक! अच्छा, ये बोलते हैं कि ये नैचुरल यानी कुदरती आपदाएँ उनको रोक सकती हैं थोड़ा! बस, ये कहते आते हैं कि...वर्ष के बाद, तीन वर्ष के बाद इतना अन्न होना जो हमको मँगाना नहीं होगा; परन्तु पिछाड़ी में जो बोलते हैं– अरे ... हो गया, अरे ये बरसात नहीं पड़ी, ये फलाना हो गया। अभी इसमें हम क्या करें! देखो, ये तो ईश्वर के हाथ में है। नैचुरल कैलेमिटीज़ आ जाती है। ...अभी तुम जानते हो ना कि ईश्वर के हाथ में क्या है, ईश्वर क्या करने वाला है। सो भी तो तुम बच्चे जानते हो, बरोबर विनाश ही होने वाला है। ये जितना मत्था मारेगा इतना फैमिन ज़रूर होने का है, कुछ भी हो जावे; क्योंकि अभी भी फैमिन आ सकता है, अगर लड़ाई कोई बड़ी लग जावे– ये चीन की या अमेरिका की या किसकी भी। तो स्टीमर आना तो फट बंद हो जाएगा। .... इनका खाना कहाँ से आएगा इतना! लाखों टन आते हैं। तभी भी बहुत डुक्कड़ लगा हुआ है। बहुत मरते हैं, ढेर मरते हैं। पानी नहीं। अच्छा, पानी नहीं बरसता है, पीछे पानी भी नहीं, अन्न भी नहीं। सो तो तुम बच्चे जानते हो कि बरोबर ये कोई नई बात नहीं है। कल्प पहले भी ऐसे हुआ था। अभी कल्प–2 का तो

कोई को ज्ञान नहीं है। भले बच्ची इतना भी है कि कोई कहते हैं कि बरोबर क्राइस्ट के 3000 वर्ष पहले ये भारत स्वर्ग था। भारत ही था। वो लोग कहते हैं पैराडाइज़ ही तो भारत होगा, और कौन था! समझते हैं ... प्राचीन देश है। तो वही होगा भारत । 5000 वर्ष की बात हुई। क्राइस्ट के 3000 वर्ष पहले। अभी कहते हुए भी फिर शास्त्रों में लिख दिया है कि कल्प लाखों वर्ष का है। 84 लाख जन्म होना है ; परन्तु कोई अटेंशन उन चीज़ों के ऊपर थोड़े ही जाता है। बस, सुन करके फिर अपने धंधे में लग जाते हैं। ये तो तुम बच्चे हैं जो बाप बैठकर बच्चों को अच्छी तरह से समझाते हैं– बच्चे, जल्दी–2 पुरुषार्थ कर लो। ये जो तुम्हारा युक्ति बतायी है, बड़ी अच्छी युक्ति कि योग में, याद में रहो तो ये जो खाद है ना वो निकल जाएगी। तुम फिर यहाँ का यहाँ। तुमको यहाँ ही सतोप्रधान बनना है, न तो सज़ाएँ खा करके जो–2 हैं जिस स्थान में तो उसमें चले जाएँगे। कल्प पहले भी बाप ने आ करके तुमको पढ़ाया है। अभी भी फिर बाप पढ़ाते हैं। श्रीमत भगवान की। तो भगवान बाप हुआ ना। श्रीमत कोई कृष्ण की थोड़े ही है। कृष्ण किसको मत देगा बच्चा ! वो तो राजकुमार है और फिर राजा बनेगा और वो है प्रालब्ध। अभी देखो, कितनी गुह्य बातें! दुनिया में इन बातों को कोई नहीं जानते हैं। बल्कि तुम्हारे पास बहुत हैं बच्चे जिनकी बुद्धि... होना ही है ना। उनको भी बनना तो है ना। बुद्धि में ये भी नहीं है बरोबर कि हम पुरुषार्थ करें, बाबा का सुनें और धारणा करें और बाबा को याद करें बहुत लव–प्यार से, उनसे बातें करें, दूसरे को कोई समझावे बैठ करके। और ये सो भी कितना? शिवबाबा को याद करो; क्योंकि शिवबाबा तो सबका बाबा है ना। तो अभी शिवबाबा खुद कहते हैं कि मामेकम्। अच्छा, खुद नहीं कहते हैं, हम कहते हैं। वो भी तो कल्याण करते हैं ना कि हम कहते हैं कि और सर्व का संग छोड़ एक परमात्मा का जोड़ो। जो तुम कहते आते थे वो हम खुद करेंगे और तुम्हारी सर्विस में हाजिर होंगे। क्या सर्विस में? ये भारत का बेड़ा पार करने। बेड़ा डूबा हुआ है ना। ये सत्यनारायण की कथा भी भारत से ताल्लुक रखती है। कोई दूसरे नेशन वाले थोड़े ही समझते हैं। तुम जाओ, सत्यनारायण की कथा कोई खालिस को जाकर बताओ। सुनेगा? नहीं। कोई आर्य समाजी को तो बताओ। कोई को भी। जो भी दूसरे धर्म वाले हैं उनको तो बताओ। सत्यनारायण की कथा सुनेंगे ही ज़रूर जो नर से नारायण बनने वाले होंगे। जो आदि सनातन देवी–देवता धर्म वाले होंगे सिर्फ वही सत्यनारायण की कथा सुनेंगे। वही अमरकथा सुनेंगे। जिन्होंने कल्प पहले भी सुनी है वही आ करके सुनेंगे, दूसरा कोई सुनेगा ही नहीं; क्योंकि हम जानते हैं कि अमरकथा सुनने से...। ये अमरपुरी में जो ये देवी–देवताएँ थे, वो कहाँ से इतना पद प्राप्त किया। ज़रूर मृत्युलोक में अमरकथा सुनी है जो अमरलोक...; क्योंकि इसको कहते ही हैं मृत्युलोक और सतयुग को अमरलोक ही कहा जाता है। ये तो बिल्कुल सहज बात है ना। एक–2 बात याद करने लायक है। बाबा इतनी बातें समझाते हैं, एक भी बात बुद्धि में बैठ जावे और उनको याद करे, तो सभी जो भी बातें समझाते हैं वो भी बुद्धि में आ जाएँगी; क्योंकि बात तो एक ही है ना– बाप को याद करने की और ये सृष्टि चक्र को ध्यान में रखने की। और दूसरा तो कुछ नहीं है ना। और हम ये जानते हैं कि विनाश सामने खड़ा है और हम अभी बाबा के साथ पार्ट बजा रहे हैं। बरोबर आगे भी बाबा के साथ बजाया था पाण्डवों ने। पाण्डव, कौरव, यादव। अभी वो शास्त्रों में तो बहुत ही लिखा है। तो बाप शास्त्रों की बात को उठा करके तुमको समझाते हैं कि सच क्या है, झूठ क्या है। तो ज़रूर सच तो इनको कहा जाता है ना। तो ज़रूर एक सत्य है, बाकी सभी है झूठे। सो आ करके बाप बैठकर समझाते हैं। देखो, जो कुछ भी ; गीता झूठी कर दी है। भागवत देखो, झूठा हो गया। रामायण ये सब झूठा हो गया। समझाते हैं, पीछे कहते हैं ना कैसे हो सकता है भला। उन्होंने कहा है कि लंका में रावण था। अभी लंका में एक रावण था। कोई एक सीता की बात है क्या एक सीता चोरी की? सत–त्रेता में कोई ऐसी बातें तो होती भी नहीं हैं। ये कहाँ से बात आकर बनायी! तो बैठ करके समझाते हैं बच्चे, ये लंका तो ये सारी लंका ही है। सारी दुनिया लंका है। बेट है सागर के ऊपर। ये सारे हैं। इस समय में सभी रावण राज्य हैं। सभी जो भी मनुष्य मात्र हैं– भगत, सीताएँ। सब कह देते हैं– सभी सीताएँ, भगत। सीताएँ जो एक राम को याद करती हैं। राम की सीताएँ हैं। बच्चे हैं ना,

सजनियाँ हैं ना भला। सभी भगत सजनियाँ हैं, भगवान को याद करती हैं। तो सजनी हो गई ना बरोबर। तो सजनियाँ क्यों बाप को याद करती हैं? क्योंकि इस समय में रावण का राज्य है। कहाँ? क्या लंका में? नहीं–2, ये सारी सृष्टि में रावण का राज्य है। अभी ये सन्यासी थोड़े ही समझ सकेंगे इन बातों को। तो ये सभी बिचारे दुःखी हैं, रावण की जेल में, शोक वाटिका। अभी इस समय में कलहयुग शोक वाटिका है और सतयुग अशोक वाटिका। कोई किस्म का शोक नहीं। यहाँ तो कदम–2 पर शोक है, जिसको दुःख कहा जाता है। तो तुमको बाबा आ करके अशोक, स्वर्ग में ले चलते हैं। इसको कहेंगे शोक। नर्क है यहाँ। सब शोक है ना देखो।.. आदमी कोई मरता है तो भी शोक करते हैं। कितना रोते हैं। चरिये भी हो जाते हैं। कोई का बच्चा मरता है, स्त्री मरती है, पति मरता है, तो चरिये हो जाते हैं। सती भी बन जाती हैं। अभी ये सभी बातें स्वर्ग में तो नहीं होती हैं ना। वहाँ अकाले मृत्यु, मरते ही नहीं हैं जो कोई स्त्री विधवा बने। वहाँ विधवा का नाम ही नहीं गाया जाता है। वो हर एक स्त्री मरे तो भी वो कहेंगी मैं दूसरा चोला लेती हूँ। अभी दूसरा चोला मेल का लेंगी या फिमेल का लेंगी, वो भी उनको साक्षात्कार हो जाता है। यहाँ इतना साक्षात्कार नहीं होता है। पिछाड़ी में हो सकेगा। हाँ, ये भी तुमको पिछाड़ी (में) मालूम पड़ेगा कि हम भविष्य में मेल बनने वाली हैं या फिमेल बनने वाली हैं; क्योंकि बाबा–मम्मा का तो मालूम पड़ गया ना। तो ऐसे बहुतों का आगे कुछ न कुछ माला में दाना बनाते थे फलानी मेल बनेगी, फलानी स्त्री बनेगी, फलाना फलानी का बच्चा बनेगा। ये भी इतना तक शुरुआत में। अभी तो तुम बहुत ज्ञान धारण कर रही हो। पिछाड़ी में तुमको सब मालूम पड़ेगा। इसलिए बाप कहते हैं पिछाड़ी में जो शोक करो कि हमने मेहनत नहीं की। सो तो पास्ट हो गया। मेहनत नहीं की, सो फिर मेहनत आएगी क्या अंदर! इसलिए बाबा सावधान करते रहते हैं कि सच्चे बाबा से सच्ची मेहनत और सच्चा उनका राइट हैण्ड बनो; क्योंकि लेफ्ट हैण्ड बनेंगे तो प्रजा में चले जाएँगे और राइट हैण्ड बनेंगे तो राजाई में आ जाएँगे। इसलिए राइट हैण्ड बन करके सर्विस में लगे रहो। जैसे देखो, ये मिसाल तो है ना। ये तुम्हारे तो वो कर्म, इसको फिर कर्म कहते हैं, सारे का कर्म, तो इस कुटुम्ब के आगे के कर्म बहुत अच्छे किए हुए हैं, जो सभी हथियाला बांधकर सभी इकट्ठा चलकर इस ईश्वर की सर्विस में लग जाते हैं। तो ये अच्छा है ना। इसमें अपना कल्याण है ना। बस, चक्कर पिछाड़ी चक्कर, चक्कर पिछाड़ी चक्कर। हम सुख करके सोने का नहीं है। बैठकर खाना और सोना हराम है। तो वास्तव में तुम बच्चों को तो बड़ा हिर्स होना चाहिए और ही। कितनी आत्माएँ सुखी होती हैं, कितनी आत्माएँ खुश होती हैं। कितनी आत्माओं को रास्ता बताया। कितनी को तुमने प्रजा बनाया। भले कोई उनमें से आगे चल करके राजा–रानी भी बन सकते हैं। पर बीज तो तुम बच्चों ने बोया ना; क्योंकि जमदेजाम तो कोई नहीं होते हैं। पहले प्रजा का ही अधिकारी बनते हैं। पीछे पुरुषार्थ करते–2 क्या बन सकते हैं। तो तुमको देख करके दूसरे को भी ऐसे ही कि हम भी ऐसे क्यों नहीं पुरुषार्थ करें। नहीं तो अगर हम अभी पद नहीं पाएँगे तो कल्प–कल्पान्तर हमारा ऐसा बुरा हाल होगा। पिछाड़ी में जब होगा ना, तब ऐसे रोएँगे, रड़ेंगे। एक तरफ में पछतावा, एक तरफ में सज़ाएँ सामने, अरे बच्ची बात मत पूछो। वो अवस्था उस समय में बड़ी दुःखी रहती है। उस समय जैसा दुःख मनुष्य कभी भी सारी दुनिया में नहीं देखते हैं। यानी ये दुःख तो है ही कलहयुग में। जो दुःख पिछाड़ी में देखेंगे श्रीमत पर न चलने के कारण, बच्ची बात मत पूछो और विवेक भी ऐसे समझ जाता है ना। इतना जो पाप का बोझा है....सो ज़रूर भोगना पड़ेगा ना। अनेक विकर्म किए हुए हैं। तो बाबा रास्ता भी बिल्कुल सहज समझाते हैं। बोलते हैं मैं थोड़े ही तुम बच्चों को तकलीफ देता हूँ। सिर्फ कहता हूँ बाप को याद करो और औरों को भी यही रास्ता बताओ। वो जो कहते हैं– सर्वव्यापी है, अभी उससे तो कुछ फायदा नहीं है। उससे तो देखो क्या हो गया है! सर्वव्यापी के ज्ञान से ग्लानि। सो ग्लानि कैसे सिद्ध करो? ग्लानि सिद्ध ही करो गीता के द्वारा ; क्यों(कि) आजकल शास्त्रों का बहुत प्रचार है ना गीता द्वारा कि कृष्ण का, जिसको भगवान कहा जाता है, भगवान तो एक है ना, वो तो निराकार है। साकार को किसको भगवान नहीं कहा जाता है। जब ब्रह्मा को देवता, विष्णु को देवता, शंकर को देवता, तो मनुष्य को मनुष्य कहा जाता है। कृष्ण को दैवी गुणों वाला मनुष्य कहा

जाता है और वो देवी–देवता धर्म है। जैसे दूसरे धर्म हैं ना– इस्लामी,बौद्धी,क्रिश्चियन। वो धर्म हैं वास्तव में। भई, देवी–देवता या जिसको डिटीज़्म कहा जाता है, धर्म है। उसको भगवान भी नहीं कहा जा सकता है, मनुष्य कहा जाता है। मनुष्यों का देवी–देवता धर्म। ब्रह्मा,विष्णु,शंकर वो तो हैं ही तीनों। उनकी तो कोई बात ही नहीं है। ये तो बड़ा धर्म है। ये न कोई भगवती–भगवान है और न कोई ये दैवी गुणों वाले मनुष्य हैं। ये कृष्ण, इसको मनुष्य कहा जाएगा। देवता धर्म का मनुष्य। जैसे दूसरा क्रिश्चियन धर्म का मनुष्य, इस्लामी धर्म का मनुष्य तैसे ये भी। क्यों दैवी? क्यों(कि) बहुत पवित्र है। इनका ऐसा धर्म दूसरा तो कोई हो नहीं सकता है ना। बिल्कुल नहीं। सब सतयुग–त्रेता में आधा समय पवित्र। ये तो कोई नई बात तो नहीं है ना। स्वर्ग–नरक, स्वर्ग–नरक तो गाया ही जाता है। हैविन तो गाया ही जाता है। हेल भी गाया जाता है। तो हैविन किसको कहा जाता है, मनुष्य मात्र नहीं जानते हैं। भारत खुद नहीं जानते हैं बिल्कुल। भारत में ही तो बाबा आते हैं और आ करके बच्चों को खड़ा करते हैं, फिर से जगाते हैं। अभी जागते हो ना। आकर कहते भी हैं– अरे भई, अभी बाबा आ गया है। सामने ये भंभोर को आग लगनी है। भंभोर किसको कहा जाता है? अभी भंभोर कोई सिर्फ भारत को थोड़े ही कहा जाता है। वाह! पहले तो और ही वो मरते हैं। यहाँ तो फिर भी बच जाते हैं। आग लगती है बॉम्ब्स से। वो तो खतम ही हो जाने वाले हैं। तो उनको ये भी समझ नहीं आती है– अरे भाई, आज 5000 वर्ष की बात है, 3000 बिफोर क्राइस्ट ये भारतवासी देवी–देवताएँ थे और उनको ही स्वर्ग कहा जाता था। वही स्वर्गवासी नर्कवासी बना है ; क्योंकि उनको पुनर्जन्म ले करके नर्कवासी ज़रूर बनना है। फिर नर्कवासी से बाप आ करके पावन बनाते हैं। पतित बनाना माना नर्कवासी बनना। और कहते हैं हम पतित को आ करके पावन बनाओ। साधु,संत,महात्मा सभी रड़ियाँ मारते रहते हैं कहाँ भी जाओ, भले गंगा जी पर जाओ। वहाँ स्नान भी करते रहेंगे और अंदर जब ताली बजाते और गाते होंगे ना– पतित–पावन सीता–राम। एक तरफ में वहाँ गंगा के ऊपर पटरी के ऊपर बैठे रहते, एक तरफ में गाते रहेंगे– पतित–पावन सीता–राम, पतित–पावन सीता–राम। इतनी मूर्खता हुई ना! अभी तुम बच्चे जानते हो, सयाने हो गए हो, समझू भी हो। तो बाबा कहते हैं उसमें भी जो चित्र बनाते हैं, उसमें भी ऐसे ही, गंगा में.....। ब्राइड्स–सजनियाँ, वो एक साजन। वो आ करके सब सजनियाँ को शोक वाटिका से अपने अशोक वाटिका ले जाते हैं। अभी शोक वाटिका, अशोक वाटिका भी नाम सुना ना। तो देखो, ये लोग होटल बनाया, अशोका होटल। क्यों भला अशोक नाम क्यों रखा है? क्योंकि बहुत सुख है ना उसमें। तो उन्होंने अशोक नाम रख दिया है। शोक तो रखेंगे नहीं। कोई शोक होटल तो कोई का नाम नहीं। तो सब बातें अच्छी रखते हैं– अशोका होटल, अशोका फलाना। बहुत ही नाम रखते हैं। बाप बैठ करके अच्छी तरह से समझाते हैं बच्चों को कि बच्चे, और कोई तकलीफ तो नहीं। जब यहाँ भी बैठते हैं तो पहले–2 सबको कहो बच्चे, बाबा को याद करो, जिससे वर्सा लेना है, बाप को याद करो। नहीं तो बच्चे तुम यहाँ बैठ जाते हो, वो अपने ही घुटके में बैठे रहते हैं। कोई किसको याद करते हैं। बाबा (ने) बताया ना भक्तिमार्ग में भी यही हाल है। जन्म–जन्मांतर की तो बात नहीं है। ये तो समझते हैं ; परंतु अनुभव भी बताते हैं ना कि भक्तिमार्ग में, बाबा जो खुद कहते हैं नारायण का चित्र, जिसको सदैव बाजू में रखते थे, ये भी पॉकेट में रखते थे, तो भी भूल जाता था। भूल जाने के कारण फिर घड़ी–2 देखते थे प्यार से। पर वो कब तलक चला? बस वही थोड़ा वक्त चला। फिर तो चित्र बनाकर रख दिया ऊपर में। फिर पता नहीं, मैं तो समझता हूँ– कभी आ करके सुबह को मंदिर में मूर्ति रखते हैं तो हाथ जोड़ते हैं ना, मैं नहीं समझता हूँ कि मैं कोई अंदर आता होगा जब गद्दी पर, कोई हाथ जोड़ता हूँ। ना। दुकान वाले हाथ जोड़ते हैं दुकान को। .....वो कभी भूलेगा नहीं कि रोज़ जाना है और दुकान में हाथ ....। बाकी घर में घुस करके और कोई मंदिर को रोज़ करे, ये हो नहीं सकता है। नहीं तो जाते हैं, कोई नेमी होते हैं, भई पहले–2 देवताओं को ; मंदिर में जा करके पीछे वहाँ जाते हैं। परन्तु मंदिर ... भूल जाएगा; पर दुकान के ऊपर जाएगा, माथा ज़रूर ठोकेगा। बाबा धंधेधोरी का भी तो अनुभवी है ना। भले वो धंधा जवाहर का था, ये अविनाशी ज्ञान रत्नों का था। धंधा तो सबसे अच्छा जवाहर का गिना जाता है ना। बहुत

अच्छा है। उसमें सच और झूठ की बड़ी मुश्किलात दिखाई पड़ती है। वैसे ही यहाँ इस समय में भी सच और झूठ की, देखो सच छिपा हुआ है, झूठ ही झूठ चलती रहती है। तो डिफिकल्ट है ना। तो देखो, उस जवाहरी से फिर ये अविनाशी ज्ञान रत्नों का जवाहरी का रथ लेने के लिए बाबा ने इनको ही रथ बना दिया। ये ड्रामा में बनावट है। अभी बदलने वाला तो कुछ भी नहीं है। क्योंकि यहाँ तो सारी दुनिया के इतने सब जो तुम्हारी बुद्धि में रहते हैं, जो भी दुनिया के एक्टर्स हैं, वो सभी इस ड्रामा के एक्टर्स हैं और एक भी ड्रामा में से निकल नहीं सकते हैं। कोई भी वापस नहीं जा सकते हैं। कोई भी मोक्ष नहीं पाएँगे। जो भी हैं, जितने भी अभी 500–550 हैं। अभी कोई गिनती नहीं करते हैं। पर विवेक से काम लेना पड़ता है। कोई एक भी छूट नहीं सकते हैं कभी भी। ये चलता आता है। ये इतने सभी इस्लामी–बौद्धी, ये दुनिया इस समय में जो देखती हो, ये सारी फिर कल्प बाद ऐसे ही देखेंगी। और भी आगे चल करके जब लड़ाई शुरू हो जाएगी, विनाश के पहले, फिर तुम समझेंगी कि वो देखो कितने मनुष्य हैं और ये कितने सभी मरेंगे। फिर थोड़े होंगे। ये सभी कहाँ जाएँगे? सभी आत्माएँ जाएँगी अपनी निराकारी दुनिया में। ये बुद्धि में ज्ञान है, जो–2 सर्विस पर हैं। सबके पास ये ज्ञान नहीं है। तो सर्विस में लगे रहेंगे ...कल्याण है। तुमको देख करके और भी तुमको फॉलो करेंगे, बहुत ढेर के ढेर। तो देखो, कितने निमित्त बनेंगे! और तुम बच्चों को कोई गृहस्थ व्यवहार में रह करके... गृहस्थ क्या सम्भालेंगे! तुम्हारे पास है ही क्या, जो सम्भालेंगे! तीनों ही बन गए हैं सर्विसेबुल और वो बच्चे भी ठीक हैं चलो। एक बच्चा तो आएँगे, वो भी तुम्हारे साथ सर्विस में लग जाएँगे; क्योंकि उनको क्या चाहिए फिर भला! उनको पैसा तो नहीं चाहिए ना। उनको भोजन चाहिए ना। तो भोजन तो तुमको गवर्मेन्ट से मिलेंगे। तो पैसे की क्या दरकार करेंगे? वो क्यों पैसा कमावे ? तुम्हारा क्या नाम है? (किसी ने कहा–चन्द्रू) चन्द्रू। क्यों जा करके नौकरी करें? जबकि गवर्मेन्ट का बन जाते हैं, तो उनको नौकरी करने की दरकार नहीं है। यहाँ तुम्हारे संग में, बाकी जो वो भी तुम्हारे साथ रहेंगे– बाप–माँ, बेटी, बच्चा। अरे, वण्डरफुल हो जाएगा। समझा ना। बाबा के पास....ये प्रोग्राम है कि तुमको देख करके और भी करेंगे। यानी भूख तो नहीं मरती हो? मौज से रहती हो? पैसे भी पड़े हैं तुम लोगों का। कोई ऐसे तो नहीं है कि नहीं हैं। पर गवर्मेन्ट के हो। तुम कितने को सुख देते हो। बाबा कहते हैं तुम्हारे कुटुम्ब जैसा कम्बाइण्ड और कोई हमारे पास फैमिली नहीं है। पक्की–2 सच्ची फैमिली– माँ–बाप और बेटी। एक बेटा ज़रूर चाहिए। तो पूरी फैमिली हो जाएगी। पीछे देखो, तुमको देखकर और भी कितने पुरुषार्थ करते हैं। बाबा महिमा तो करते रहेंगे ना। कौन महिमा करते हैं? अरे, शिवबाबा महिमा करते हैं ना। उसके साथ दादा कम्बाइण्ड है। अच्छा, बच्चे भी तो महिमा समझते हैं ना। ये कोई बुद्धू तो नहीं हैं ना। ये बरोबर सर्विस करते हैं। हाँ, उसमें थोड़े नंबरवार ज़रूर कुछ हैं। उसमें कुमारी देखो तीखी जाती है और कुमार शायद इनसे भी तीखा जावे। इसके सेकण्ड में कुमार आ जायेगा शायद। तो बाबा एक्सपेक्ट तो करते हैं ना। कुटुम्ब हो तो ऐसा हो। बाबा का भी कुटुम्ब ऐसा नहीं हुआ, इनका। देखो, बच्चों का कुटुम्ब निकल गया अच्छा। कितनी महिमा के लायक बनते हो। टोली ले आओ। पहले–2 सावधानी ; क्योंकि बुद्धि चक्कर लगाती रहती है। कभी भी कोई यहाँ बैठे रहते हैं, तो इतना देरी कोई बाप को याद नहीं करते हैं। नहीं, कोई नंबरवार....। नहीं तो बुद्धि चली जाती है कहाँ का कहाँ। बड़ी भागने वाली है ये। इनका भाई नंबर वन लक्ष्मण, बाप और इनकी माँ नंबर वन। वो यहाँ रहते थे, बोलते थे– वाह! ये तो शिवबाबा का सब कुछ है। शिवबाबा से कहे कोई पैसा भी न खर्चे एकदम; परन्तु कोई थोड़ा संग रह जाता है। ज्ञान पूरा नहीं है। अर्पणमय जीवन बड़ा अच्छा। उसमें बाकी एक है कुछ जो थोड़ा चंचल है इनके लिए। तो सुनेंगे,आएँगे,समझाएँगे। तो देखो, सैम्पल बताऊँगा तभी तो खुश होगा ना। ये भी ऐसे ही है। भाई बहुत फर्स्टक्लास, ये भी बहुत फर्स्टक्लास, दिल पर चढ़ा हुआ। (किसी ने कहा– टेप में सुन रहे हैं।) हाँ–2, टेप में तो सभी सुनेंगे ना। (किसी ने कहा– सुन रहे हैं) हाँ–हाँ.....। सेन्सीबुल वो जो समझे और बढ़ावे। अगर तुम ये न भरता होता तो मैं हन्टर मारता; क्योंकि सुधरेंगे कैसे? दूसरे भी बनेंगे ना। ये शिवबाबा महिमा कर रहे हैं ना। ये बुद्धू लोग हमारे पास हैं, वो समझते हैं, ये बाबा ही बाबा है, शिवबाबा है

नहीं। नहीं–2, पर सब शिव को ही याद करो। बाबा युक्ति बताते हैं– अरे, ऐसे ही समझो कि शिवबाबा ही सब कुछ करते हैं और वही तो सारा करते हैं, सच ही करते हैं ना। ये करते हैं इन द्वारा। इन द्वारा करते हैं। दोनों करते हैं। ...पीछे है शंकर। वो देखो, वो वहाँ सर्विस पर है। ये वहाँ कलकत्ते की सर्विस पर है। जो भी वहाँ कलकत्ते का कारोबार है, ये बिल्कुल अच्छी तरह से देखते हैं। जो कुछ भी इनको मिलता है वो सभी सर्विस में भेज देता होगा वहाँ भी; क्योंकि इनका फर्ज है वहाँ। है तो वो भी; परन्तु बच्ची है और न भेजे तो भी एक ही बात है; क्योंकि बच्ची भी सर्विस में है। छोटी है फिर भी। खुदाई खिजमतगार, तो देखो नामा...वाले तो बहुत हैं वो मुसलमान लोग में। ये तो तुम सच्ची–पच्ची सच्चे–2...। सर्विस बहुत सहज भी देखने में बड़ी आती है। बेहद के बाबा को याद करो। बेहद का सुख मिला था ना। 5000 वर्ष पहले भारत स्वर्ग था और 84 जन्म का हिसाब बताती हो। बोलता हूँ ऐसे– अरे भई, तुम लोग भारतवासी ये थे, 84 जन्म पूरा हुआ है। अभी फिर बाप को याद करो और उनसे वर्सा लो। देवी–देवता बनो। ठिक्कर से ठाकुर बनो। नहीं तो अभी तो ठिक्कर बुद्धि, पत्थर बुद्धि सो ठिक्कर बुद्धि। (किसी ने कहा– बाबा, लंडन जाती है) हैलो! लंडन। अभी लंडन की रजनी रानी बनी है या विलायत की रानी बनती है या अपने विश्व की महारानी बनती है। अच्छा! हैलो रजनी! मधुबन से बापदादा याद कर रहे हैं। आज टेप फिर भेज देते हैं। टेप के लिए अब कोई फिक्र मत करना। मुरलियाँ आती रहेंगी। और फिर वहाँ से टेप कैसे वापस होता है या हांगकांग देना है। फिर हांगकांग से कैम्बोडिया भी शायद भेज देना होगा। वो जो है, क्या नाम है, चंद्रू नाम है, शायद चंद्रा नाम है! वासी और चंद्रा। वासी जो वहाँ पूने वाले की। शायद तुम जानती होंगी ज़रूर। वहाँ शायद तुम भेजेंगी हांगकांग और हांगकांग से फिर वो वहाँ भेज देंगे, कुछ ऐसा होगा; परन्तु उनको भी टेप भेज देने का है। अच्छा, और कोई समाचार। मौज में तो हो ना। अच्छा, पूछते रहो चिट्ठियों में क्या चाहिए! क्या चाहिएगा यहाँ! शिवबाबा का भण्डारा तो भरपूर है। बाकी यही है टेप्स और टेपरिकार्ड्स मशीन। ये चीज़ें चाहती हैं और क्या चाहता होगा, समझती हो। कोई भी चीज़ की इतनी दरकार नहीं रहती है। ये टेप्स और क्या कहते हैं, प्रोजेक्टर और प्रोजेक्टर के स्लाइड्स बनाने के लिए फिल्म्स। फिल्म्स माँगते रहते हैं। (किसी ने कहा– कलर फिल्म) कलर फिल्म्स वो मांगते रहते हैं। बस, ये भी बहुत ही खर्चा है। तेरे ऊपर कुछ कम नहीं है। अच्छा, मुरली को और बच्चों को यादप्यार देना बाबा। चन्द्रू की माँ को भी यादप्यार देना और राजी–खुशी होगी, पूछना। कोई वस्तु की दरकार हो तो भेज देंगे और चार पेज वाले इंगलिश अभी छप रहे हैं, तो भी थोड़े से भेज देते हैं और लंदन मेल में स्टीमर के रस्ते थोड़ा लिटरेचर और जो नए कैलेण्डर्स बने हैं टिन के ऊपर वो भी भेज देते हैं। जो–2 यहाँ नई चीज़ होती है वो आपको भेज देते रहते हैं। पोस्ट में जाने से कुछ भारी पड़ेगा शायद; क्योंकि टिन के हैं। (किसी ने कहा– सीमेल में) और वो सीमेल में आपको कुछ भेज देते हैं। इंगलिश में भी भेज देते हैं, हिन्दी में भेज देते हैं। इंगलिश में तो किसको भी देख करके भी समझा सकती हो। अच्छा, बच्चे राजी–खुशी होंगे। तुम भी बहुत राजी–खुशी होगी शिवबाबा की याद में। अभी बाकी थोड़ा रोज़ हैं यहाँ पुरानी दुनिया में। मेहमान हैं जैसे यहाँ। हाँ, मेहमान हैं ना! अच्छा, जाँच करना, टेप अभी ठीक भरकर भेज देते हैं। स्लो स्पीड में या जैसे स्पीड तुम माँगती हो। उस स्पीड में बोला है कि भेज दो। फिर भी कोई करेक्शन हो तो लिख करके भेज देना बच्ची। अच्छा! विदाई बच्ची।